P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4, May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

बर्धा (दमोह जिले) से प्राप्त शैलचित्रों का अध्ययन

देबीदीन पटेल
शोध छात्र,
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

योगम्बर सिंह फर्स्वाण
प्रोफेसर,
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

जब प्रागैतिहासिक मानव ने बदलते पर्यावरणीय परिवेश व भोजन की तलाश तथा यायावर जीवन से हताश होकर स्थाई आवास का निश्चय किया तो सर्वप्रथम उसने प्राकृतिक रूप से निर्मित शैलाश्रयों को आवास हेतु चयन किया। शैलाश्रयों में रहकर प्रागैतिहासिक मानव ने अपनी भावी पीढ़ी को शिकार और दैनिक जीवन सम्बन्धित गतिविधियों से अवगत कराने और मनोरंजन या प्रकृति के प्रकोप के भय से या अपने आसपास के वातावरण से प्रभावित होकर शैलाश्रयों की दीवालों, छतों आदि पर चित्रकारी प्रारंभ की। प्रागैतिहासिक चित्रकला के संदर्भ में मध्यभारत एक महत्वपर्ण क्षेत्र हैं। मध्यभारत में प्रागैतिहासिक शैलचित्रकला के लिए भीमबेटका विश्वविख्यात है। भीमबेटका में प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक शैलचित्र उत्कीर्ण हैं। मध्यभारत में सैकड़ों की संख्या में शैलाश्रयों की प्राप्ति हुई तथा दिनो–दिन नये शैलाश्रय प्रकाश में आ रहें, जिनमे प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक शैलचित्र की प्राप्ति हुई हैं। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुये प्रथम लेखक द्वारा मध्यप्रदेश के दमोह जिले, हटा तहसील के वर्धा ग्राम से 2 किलोमीटर पर स्थित वर्धा बरैया नामक बरसाती नाले के किनारे स्थित प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्रों की खोज की। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी वर्धा बरैया से प्राप्त शैलचित्रों का वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द : शैलचित्र, शैलाश्रय, प्रागैतिहासिक मानव, बर्धा, दमोह जिला

प्रस्तावना

सर्वप्रथम आदि मानव ने अपने विचारों एवं अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिये कला का सहारा लिया। मानव मस्तिष्क के अंर्तमन में उपजित भावों एवं कल्पनाओं की चित्रों के माध्यम से व्यक्त कर उसने सम्भवतः अनन्त काल तक अक्षुण्ण रहने वाली अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। मानव द्वारा आरेखित इन चित्रों के माध्यम से प्राचीन काल की संस्कृति का यथार्थ स्वरूप का ज्ञान तो होता ही है, इसके साथ ही इनसे आदि मानव की सृजनात्मकता, रचनाशीलता व कलात्मक अभिवृत्ति का भी ज्ञान प्राप्त होता है (पाण्डेय एवं मिंश्रा, 2017)।

पुरातत्ववेत्ताओं व मानवशास्त्रियों द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि शैलाश्रय अति प्राचीन काल से ही आदि मानव के निवास स्थल थे, जिनमें वह सिर्फ आवास ही नही करते थे बल्कि आराम के क्षणों में अपनी मूक भावनाओं को टेढ़ी–मेढ़ी रेखाकृतियों के माध्यम से गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते थे (पाण्डेय, 1993)। भारतवर्ष के लगभग सभी प्रदेशों में प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्रों की प्राप्ति हुई हैं, किन्तु मध्यक्षेत्र को प्रागैतिहासिक संस्कृति एवं शैलचित्रकला के क्षेत्र में सर्वाधिक व सर्वोत्कृष्ट माना जाता है।

विश्व में सर्वप्रथम प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्रों के खोज उन्नीस सदी के उत्तरार्द्ध मे उत्तरी स्पेन के अल्तमीरा नामक पुरास्थल से प्राप्त गुफाओं में चित्रित शैलचित्रों से प्रारंभ हुई थी। इस खोज के पश्चात् शैलचित्रों के अन्वेषण को गति मिली तथा विद्वानों शैलचित्रों के अध्ययन को महत्व दिया जिसके परिणामस्वरूप नये–नये पुरास्थलों की खोज हुई।

पूर्ववर्ती कार्य

इस क्षेत्र में पूर्व हुये कार्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण मध्य भारत प्रागैतिहासिक चित्रकला के विख्यात है, जिसमे दमोह क्षेत्र भी आता है। सन् 1973 में वी.एस.वाकणकर द्वारा प्रस्तुत शोध ग्रन्थ ''पेन्टेड रॉक शेल्टर इन इंडिया'' में मध्य भारत में प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया तथा वाकणकर महोदय विश्वविख्यात भीमबेटका पुरास्थल की खोज की। सन् 1984 में प्रकासित ''प्रीहिस्टोरिक रॉक पेन्टिगस् ऑफ भीमबेटका'' में यशोधर मठपाल महोदय ने भीमबेटका के शैलचित्रों विस्तारपूर्वक अध्ययन किया तथा वहाँ उत्कीर्ण शैलचित्रों का व्यवस्थित अध्ययन कर सिद्ध किया कि यहाँ उत्कीर्ण

शैलचित्र प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के है। सन् 1996 में पूर्णिमा मसीह द्वारा प्रकासित अपने शोध ग्रन्थ ''मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिक चित्रकला'' में मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिक कालीन शैल चित्रकला का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, इस पुस्तक में लेखक ने मध्यप्रदेश के लगभग सभी जिलो में स्थित प्रागैतिहासिक चित्रकला का वर्णन किया है जिसमें दमोह जिले की प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला से भी सम्बन्धित पुरास्थलों का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, जो कि प्रस्तुत अध्ययन में बहुत सहायक है।

किसी क्षेत्र के शैलचित्रों के अध्ययन के पूर्व उस क्षेत्र के प्रागैतिहासिक भूमिका का ज्ञान आवश्यक होता है। चूँकि मध्यप्रदेश में 19वीं शताब्दी से प्रागैतिहासिक शोध कार्य होते आ रहे है जिससे ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश प्रागैतिहासिक कालीन अवंशेषों की प्राप्ति के लिये कुछ इसी प्रकार दमोह जिले में भी प्रागैतिहासिक कालीन अध्ययन हुये जिससे पता चलता है कि यह क्षेत्र भी प्रागैतिहासिक मानवों द्वारा विचरण हेतु चयनित किया गया था जिसके प्रमाण के रूप में इस में प्रागैतिहासिक कालीन पाषाण उपकरण एवं शैलचित्रों की प्राप्ति हुई हैं। इस क्षेत्र में सर्वप्रथम डब्लू. एल. बिल्सन 1867 एवं जे. कागिन ब्राउन 1917 में प्रागैतिहासिक कालीन पाषाण उपकरणों की खोज की थी। सन् 1961 में आर.वी. जोशी *''स्टोन ऐज इंडस्ट्रीज ऑफ दी दमोह एरिया मध्यप्रदेश''* के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जोशी ने सन् 1958 में दमोह जिले में बहने वाली सुनार, व्यारमा एवं कोपरा आदि नदियों का प्रागैतिहासिक सर्वेक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप उन्हे दमोह जिले में पन्द्रह प्रागैतिहासिक कालीन पुरास्थलों की प्राप्ति हुयी, जिसमे उन्हे प्रतिनूतन कालीन जमाव से प्रागैतिहासिक कालीन पाषाण उपकरणों की प्राप्ति हुयी थी। इस प्रकार इस अध्ययन से पता चलता है कि दमोह जिले की भौगोलिक स्थिती पुरापाषाण कालीन मानव के अनुकूल रही होगी।

इस क्षेत्र में शैलचित्र की बात करें तो यह क्षेत्र शैलचित्र के लिए अत्यन्त धनी है इस क्षेत्र में पूर्व हुए कार्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दमोह जिला व उसके आसपास के क्षेत्र जबलपुर, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ, सागर आदि से शैलचित्रों की प्राप्ति हुई है।

जिले में प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की खोज सर्वप्रथम रायबहादुर हीरालाल द्वारा की गयी, जिन्होने दमोह जिले की हटा तहसील से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित फतेहपुर गाँव के समीप एक बरसाती नाले के किनारे स्थित प्राकृतिक शैलकृत से शैलचित्रों की खोज की जिसका विवरण उनके द्वारा रचित *''दमोह दीपक''* में किया गया था। इसके पश्चात् शैलचित्रों के खोज का यह सिलसिला अनवरत् जारी रखते हुए अशर्फीलाल पाठक ने अपने शोध कार्य के दौरान बटियागढ़, अंजनीबेरखेड़ी और खडेरी से प्राप्त शैलचित्रों की खोज की। पाठक जी ने इन पुरास्थलों से प्राप्त शैलचित्रों की विषयवस्तु, शैली, वातावरण तथा उनका तिथिक्रम का वर्णन अपने शोध ग्रन्थ *''दमोह जिले ऐतिहासिक पुरातत्त्व* : ईसवी–पूर्व 600 से 1200 ईसवी सन्'' में दिया। सन् 2002 में संजयबाबू सोनी द्वारा डॉ. हरि सिंह गौर वि.वि. सागर में जमा किये शोध ग्रन्थ ''दमोह जिले का पुरातत्त्व'' के अध्ययन से चार नये शैलाश्रयों का वर्णन मिलता हैं, जो सिलापरी, जोगीदंड, नोपाट, कन्सा आदि पुरास्थलों से प्राप्त हुये हैं। सोनी जी ने अपने शोध में इन शैलाश्रयों उत्कीर्ण शैलचित्रों विवरण विस्तार किया है।

पुरास्थल की स्थिति व अन्वेषणः

बर्धा गाँव, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण स्थल है, जो कि वर्तमान मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित दमोह जिले के हटा तहसील के अंर्तगत स्थित है। इस अध्ययन में प्रस्तुत शैलाश्रय बर्धा गाँव से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर बर्धा वरैया नामक नाले के तट पर स्थित है, जो लगभग 5 कि.मी. आगे चलकर सोनार नदी (जो कि केन नदी की सहायक नदी है) में मिल जाता है। प्रागैतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से सोनार नदी एक महत्त्वपूर्ण नदी हैं, शैलाश्रय की वर्तमान भौगोलिक स्थिति 24°36′ उत्तरी अक्षांश और 79°′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। शैलाश्रय की खोज प्रथम लेखक द्वारा की गई है। पुरास्थल के आस पास का वातावरण की बात करें तो यह पुरास्थल जंगल से लगा हुआ है तथा एक नाले के तट पर स्थित है, जिसमें गर्मियों के दिनों में भी पानी बना रहता हैं। इस प्रकार पुरास्थल की भौगोलिक स्थिति प्रागैतिहासिक मानव के आवास के अनुकूल थी, उन्हे पास में ही शिकार के पशु तथा फल आदि प्राप्त हो जाते रहे होगें। इस शैलाश्रय समूह में 3 शैलाकृत गुफाएँ है, जिनमें से केवल एक ही शैलाश्रय से शैलचित्रों की प्राप्ति हुई हैं, अन्य दो शैलाश्रयों को धार्मिक महत्त्व व पुरात्तात्विक ज्ञान के अभाव के कारण स्थानीय लोगों के द्वारा गुफाओं की चूने से पुताई कर दी गई है, जिसके परिणामस्वरूप इन शैलाश्रयों में उत्कीण शैलचित्र पूर्णतः नष्ट हो चुके हैं। जिस एक शैलाश्रय में कुछ चित्रण प्राप्त हुए है वो भी अस्पष्ट रूप से प्राप्त हुए है, क्योंकि इस शैलाश्रय में भी स्थानीय लोगों के द्वारा आग जलाने के कारण शैलाश्रय के अधिकांश चित्र काले या धुंधले पड़ चुके है जिस कारण कुछ चित्रों स्पष्ट रूप से पुष्टि कर पाना संभव नहीं है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4, May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

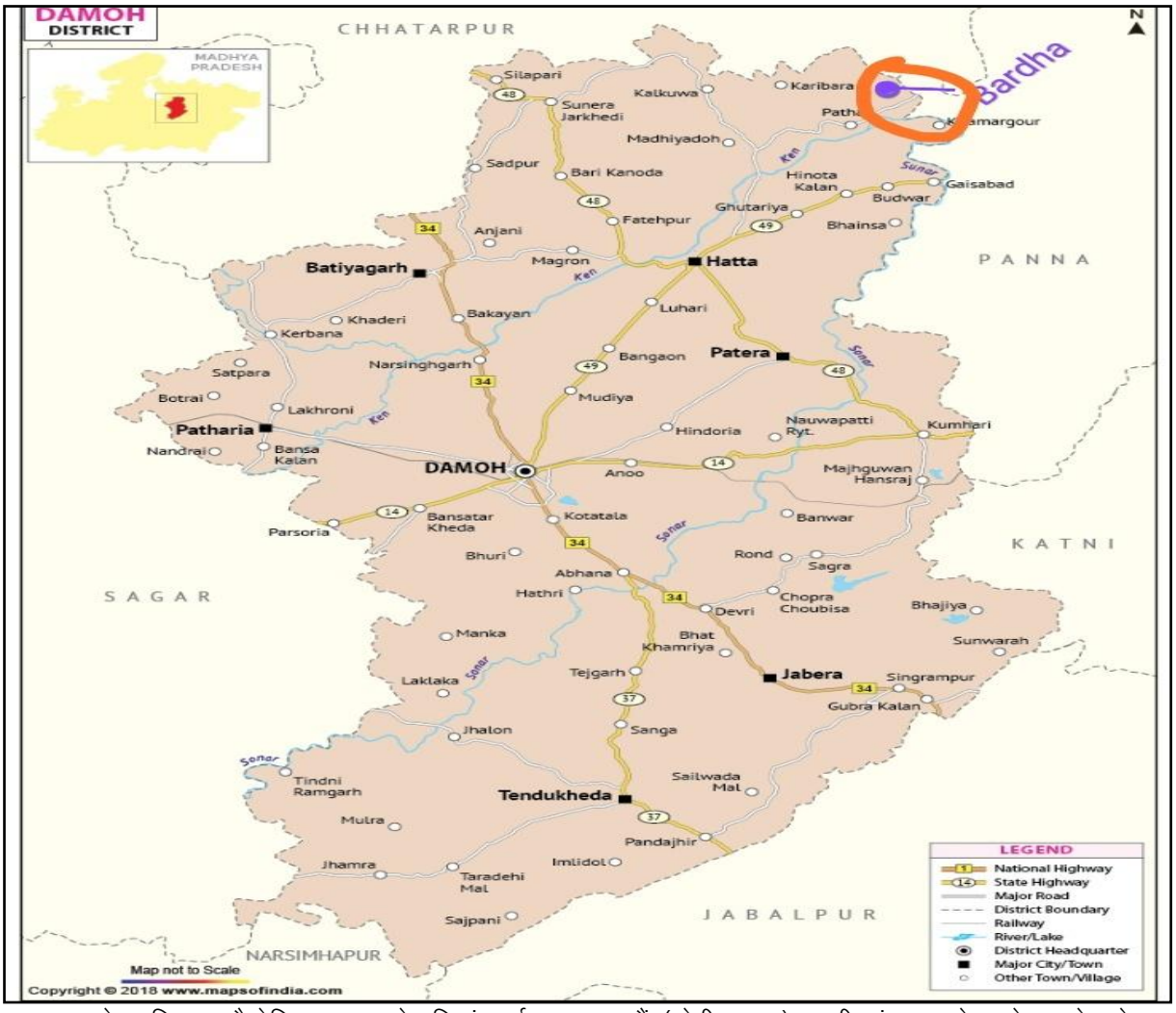

दमोह जिला भौगोलिक रूप से विध्यं पर्वत श्रंखला का भाग है। इस जिले में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियों में सोनार, व्यारमा, कोपरा आदि है, जो कि केन नदी की सहायक नदियाँ हैं। जो कि यमुना नदी प्रवाह तंत्र के अंर्तगत आती है। 1958–59 में आर.वी.जोशी द्वारा इन नदी घाटियों का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप रहली, गैसाबाद, मढ़ियादो, हारट, घोगरा, नरसिंगगढ़, असलाना, तारादेही, पिपरिया आदि पुरास्थलों से प्रमुखतया प्रागैतिहासिक काल के उपकरणों की प्राप्ति हुई (जोशी, 1961)। दमोह जिला प्रागैतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण जिला है, जिनके प्रमाण के रूप में प्रागैतिहासिक कालीन पाषाण उपकरणों तथा शैलचित्रों की प्राप्ति हुई है। दमोह जिले में अनेक शैलाश्रयों की प्राप्त हुई हैं, जिनका उपयोग प्रागैतिहासिक कालीन मानव ने आवास हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान किया। दमोह जिले के शैलचित्रों को प्रकाश में लाने का सर्वप्रथम प्रयास डॉ. हीरालाल द्वारा किया गया, जिन्होने हटा तहसील के फतेहपुर नामक ग्राम के चित्रित शैलाचित्रों कों जनसामान्य की जानकारी के लिये प्रस्तुत किया गया था। इसके अलावा दमोह जिले से इसी प्रकार के शैलचित्रों की प्राप्ति भतेहपुर, बटियागढ़, भैंसाघाट, खड़ेरी, अंजनी, बेरखेड़ी, गैसावाद आदि से हुई हैं (सोनी, 2002)। इसी श्रंखला को आगे बढ़ाते हुये हमारे द्वारा बर्धा के शैलचित्रों की खोज की गयी। जो केवल दमोह जिला या मध्यप्रदेश ही नही अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के लिये भी एक नया आयाम है।

विषय वस्तु का कलात्मक विवेचन

बर्धा क्षेत्र के शैलाश्रयों में विविध विषयों का चित्रांकन प्राप्त होता है, जिनके माध्यम से पुरा मानव की कल्पनाशक्ति एवं रचनात्मक कुशलता प्रतिबिम्बित् होती है। मध्य भारत में शैलाश्रय में चित्रण के अंकन के लिये पुरा मानव द्वारा शैलाश्रय की छत, दीवाल आवश्कता के अनुसार उपयुक्त जगह को चित्रण के हेतु चयन किया है तथा प्रागैतिहासिक काल तक मानव ने रेखांकन के साथ–साथ खनिज रंगों को शैल कला में प्रयोग करने की महारत हासिल कर ली थी(जैन, 2014)। आदिम चित्रकला में लाल, हरा, गेरूआ, काला, पीला एवं सफेद रंग प्रयोग किया गया है (सोनेवाने, 2002; जैन, 2014)। परंतु इस शैलाश्रय में चित्राकंन हेतु केवल काला एवं गेरूए अथवा लाल रंग का प्रयोग किया गया है तथा कुछ चित्रण उकेरकर बनाये गये हैं। शैलाश्रय में उत्कीर्ण शैलचित्रों की विषयवस्तु में मुख्यतया पशु –पक्षियों का अंकन, युद्ध के दृश्य, अलंकारित चित्रण, हस्थ छाप तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित दृश्यों का चित्रित किया गया हैं। इन शैलचित्रों

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4, May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

में अधिकतर चित्रों को स्पष्ट रूप से पहचान कर पाना जटिल समस्या हैं क्योंकि जन सामान्य के द्वारा शैलाश्रय में आग जलाने और अन्य गतिविधियों के चलते चित्र धुँधले पड़ चके हैं।

चित्रों को विषय वस्तु की विविधता के आधार पर शैलाश्रय के प्रमुख चित्रों का विवरण निम्नवत् हैं : –

शैलाश्रय में चित्रित दृश्यों में एक चित्रण को रेखाओं के माध्यम से मृग का चित्रण गतिमान अवस्था में दिखाया गया हैं। प्रागैतिहासिक कला में पशु का चित्रण पुरा मानव का पशुओं के साथ संबंध को दर्शाता है। जो चित्र फलक क्रमांक 1 में प्रदर्शित है।

चित्र फलक क्रमांक 1

दूसरे चित्रांकन में दो व्यक्तियों को चित्रित किया गया है जो भाला एवं तलवार लिए युद्धरत अवस्था में उत्कीर्ण किया गया हैं। इसी चित्रांकन को 'डीस्ट्रेच' साफ्टवेयर में देखने पर युद्धरत चित्रांकन के पास ही हल्के गेरूए रंग से बने कुछ अन्य चित्रांकन की झलक प्रतीत होती हैं परन्तु उनकी पहचान कर पाना मुश्किल है। यह चित्र फलक क्रमांक 2 में प्रदर्शित हैं।

चित्र फलक क्रमांक 2

तीसरे चित्रांकन में रेखाओं के माध्यम से एक बारहसिंगा या बैल सादृश्य पशु को चित्रित किया गया हैं, जिसमें उसके शरीर को रेखाओं के द्वारा अलंकृत किया गया हैं तथा पशु के सींग बहुत लम्बे चित्रित किये गये है। यह चित्र फलक क्रमांक 3 में प्रदर्शित है–

चित्र फलक क्रमांक 3

चतुर्थ चित्रांकन में हस्त छापों कों उत्कीर्ण किया गया है जिनमें से दो हस्त छापे बाएँ हाथ की छाप को उत्कीर्ण किया गया हैं तथा तीन हस्त छापों को रेखानुकृत किया हैं। शैलचित्र कला में हस्त छापों का प्राप्त होना आम हैं। इस प्रकार के चित्रण मध्य भारत में भीमबेटका, पचमढ़ी, चतुरभुज नाला आदि पुरास्थलों से प्राप्त हुये हैं। भीमबेटका में हस्त छाप के 222 अंकन प्राप्त हुये हैं (मठपाल, 1984)। इस प्रकार के हस्त छाप का अंकन भारतीय परंपरा में आज भी जनजातियों के द्वारा अपने घरों की दीवालों, दरवाजों के दोनों किनारों आदि में देखा जा सकता है (दुबे–पाठक एवं क्लोटी, 2013)। यह चित्र फलक क्रमांक 4 में प्रदर्शित हैं।

चित्र फलक क्रमांक 4

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4, May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

चित्र फलक क्रमांक 5 में प्रदर्शित चित्रांकन में एक व्यक्ति को हाथ में तलवार सादृश्य कोई अस्त्र लिये दिखाया गया है तथा दूसरा हाथ इतना अस्पष्ट है कि उसको पहचानना मुश्किल है कि उसके दूसरे हाथ में क्या है। उस व्यक्ति के सामने या उसके सामने एक पशु का अंकन किया गया है जिसकी पहचान नही की जा सकी है। तथा वही पास में ही एक लघु मानवाकृति अंकित की गई हैं, इस दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पर पशु के शिकार का चित्रांकन किया गया हैं। इस दृश्य के लिये मेरा अनुमान है कि यहाँ चित्रित तलवारधारी पुरूष तथा पास ही अंकित एक पशु एवं मानवाकृति अलग–अलग समय काल में अंकित किये गये हैं, क्योंकि यहाँ अंकित पशु व लघु मानवाकृति में प्राकृतिक शैली में उत्कीर्ण होने का आभास होता हैं तथा तलवारधारी मानव दूसरी शैली में उत्कीर्ण है। यह चित्र फलक क्रमांक 5 में प्रदर्शित हैं।

चित्र फलक क्रमांक 5

छठे चित्रांकन में गुहॉ के प्रवेश द्वार के उपरी भाग में लाइनों के माध्यम से अलंकारिक चित्रण किया गया हैं। शैलाश्रय के प्रवेश द्वार के अग्र भाग के ऊपरी भाग में उत्कीर्ण एक चित्रण जिसमें कंघी सादृश्य अंकन हैं, किन्तु इसी चित्रण के अग्र भाग में पशु को चित्रित किया गया है जिस कारण एक साथ पूरा चित्रण देखने पर ये पूरा एक ही चित्रण प्रतीत होता हैं, परन्तु इस चित्रण को ''डी–स्ट्रेच'' साफ्टवेयर में फिल्टर करने पर चित्रांकन में अध्यारोपण का आभास होता है। जिससे पता चलता है कि प्रवेश द्वार में अंकित इस चित्रण को अलग–अलग समय काल में बनाया गया है। यह चित्र फलक क्रमांक 6 में प्रदर्शित हैं।

चित्र फलक क्रमांक 6

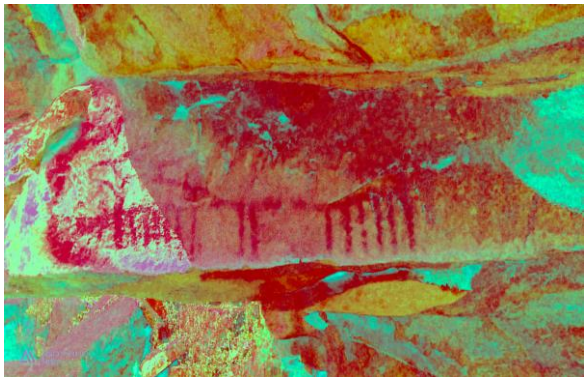

चित्र फलक क्रमांक सात में प्रर्दशित दृश्य में उकेरकर बनाई गई नाव को चित्रित किया गया हैं जिसमें सवार लोगों को नृत्यरत् अवस्था में प्रर्दशित किया गया हैं।

चित्र फलक क्रमांक 7

अन्य चित्रांकन

उपर्युक्त के अलावा शैलाश्रय कुछ और चित्रांकन मौजूद है जिनमें एक अंकन में चौघानों के द्वारा सीड़ी सादृश्य चित्र का अंकन किया गया है, एक और चित्राकंन में कुछ लोगों सामूहिक नृत्य अवस्था में चित्रित किया गया है। एक चित्रण में वृक्ष सादृश्य चित्रांकन, नृत्य अवस्था, आदि को चित्रित किया गया हैं। एक चित्रण में लम्बी गर्दन के पशु को चित्रित किया हैं, कुछ इसी प्रकार के लम्बी गर्दन के चित्रांकन भीमबेटका, बृहस्सपतिकुण्ड, पन्ना, आदमगढ़, पचमढ़ी आदि से इस प्रकार के चित्रांकन के प्रमाण मिले हैं (मठपाल, 1976–77)।

चित्र फलक क्रमांक 8

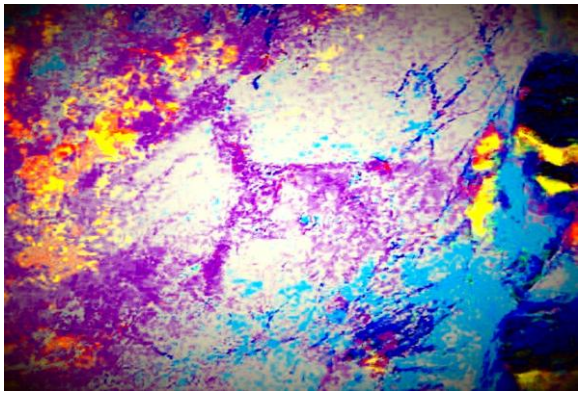

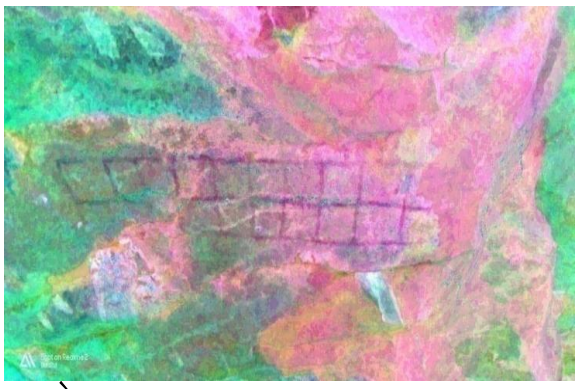

अध्यारोपण

शैलचित्रों के अध्ययन तथा कालानुक्रम के निर्धारण करने के लिये अध्यारोपण अति महत्त्वपूर्ण होता है। शैलाश्रय में चित्रांकन हेतु चित्रों एक–दूसरे के ऊपर अंकित किये गये है। यहाँ उत्कीर्ण शैलचित्रों सबसे पहले हल्के लाल या गेरूए रंग फिर उसके ऊपर गहरे लाल रंग और फिर उसके ऊपर उकेरकर चित्रांकन किया गया है तथा अंत में काले रंग से शैलचित्र बनाये गये हैं। इस प्रकार यहाँ उत्कीर्ण शैलचित्र चार अलग–अलग काल के हैं।

संभावित कालानुक्रम

शैलचित्रों का कालानुक्रम पता लगाना एक जटिल समस्या हैं क्योंकि शैलचित्र ना तो कोई स्तरीकरण प्राप्त होता है और ना ही इनके साथ कोई कार्बनिक पदार्थ मिलता हैं जिसका तिथिकरण किया सके। फिर भी शैलचित्रों के कालानुक्रम के उत्खन्न में प्राप्त सामग्री तथा उनके उत्कीर्णन शैलीगत आधार पर शैलचित्रों का तिथिकरण करने का प्रयास किया गया हैं (मिश्रा, 1981)। शैलाश्रय में उत्कीर्ण अन्य दृश्य इतने आस्पष्ट है उनकों समझ पाना मुश्किल हैं। अतः पूर्व वर्णित चित्र ही स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। प्रस्तुत शैलाश्रय में उत्कीर्ण शैलचित्रों को अध्यारोपण, विषयवस्तु तथा शैलीगत आधार पर प्रस्तुत चित्रों को मध्यपाषाण काल से लेकर प्रारंभिक ऐतिहासिक कालीन माना जा सकता है।

आलोचनात्मक व्याख्या

मध्यभारत के पर्यावरणीय वातावरण ने प्रागैतिहासिक काल से मानव को आवास हेतु उचित वातावरण प्रदान किया, जिसके प्रमाण क्षेत्र प्रागैतिहासिक कालीन पाषाण उपकरणों के रूप प्राप्त होते हैं (सिंह, 1965 ; कुमार, 2017; देहुरी एवं तिवारी, 2014)। प्रागैतिहासिक शैलचित्रकला के सादृश्य ही वर्तमान समय के आदिवासी जनजातियों में इस प्रकार की चित्रकला को देखा जा सकता हैं जिसका अध्ययन कर प्रागैतिहासिक चित्रकला को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान हैं (बेन्डरिक, 2011; दुबे–पाठक, 2013)। शैलाश्रय में चित्रित एक चित्रण में घोड़े की लम्बी गर्दन को बनाया गया हैं (चित्र फलक क्रमांक–8) इस प्रकार के चित्रण मध्य भारत में भीमबेटका, आदमगढ़, पचमढी, तथा पन्ना आदि शैलाश्रयों से भी प्राप्त हुये हैं जिन्हें यशोधर मठपाल ने जिराफ सादृश्य पशु कहा हैं (मठपाल, 1984)। विश्व की बात करें चाहे भारत की शैलचित्रकला में हस्तछापें प्राप्त होना बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी यह कला आदिवासियों के बीच प्रचलित हैं(चित्र फलक क्रमांक–4) (दुबे–पाठक, 2013; मठपाल, 1984)। शैलाश्रय में दो चित्रण में रेखाओं के माध्यम से एक मृग तथा एक बारहसिंगा या बैल सादृश्य पशु को चित्रित किया गया हैं, ये जानवर भी इस क्षेत्र में पाये जाते हैं(चित्र फलक क्रमांक–1 व 3)। मध्य भारत में मृग और बारहसिंगा के लगभग हर शैलाश्रय में प्राप्त हो जाते हैं (खत्री, 1964; मिश्रा,1981)। एक अन्य चित्रण में जो कि शैलाश्रय के अग्र भाग में उत्कीर्ण हैं एक चित्रण जिसमें कंघी सादृश्य अंकन हैं, किन्तु इसी चित्रण के अग्र भाग में पशु को चित्रित किया गया इस प्रकार एक साथ पूरा चित्रण देखने पर ये एक ही प्रतीत होता हैं परन्तु इस चित्रण में अध्यारोपण का आभास होता है। इस प्रकार का चित्रण भारतीय चित्रकला में संभवतः पहली बार प्रकाश में आया हैं (चित्र फलक क्रमांक–6)। शैलाश्रय में कुछ ज्यामितिक चित्रण भी प्राप्त होते है जिनमें एक चित्रण में सीढ़ी बनाई गई हैं जिसमें दो खानें है एवं दोनों खानों में दस–दस खानें बने हुए हैं (चित्र फलक क्रमांक–8)। दो अन्य चित्रणों में मानवाकृति को युद्धरत्त अवस्था में दिखाया गया हैं, जो हाथ में तलवार या तलवार सादृश्य हथियार और दूसरे हाथ में ढाल लिये हुये हैं। इस के चित्रण शैलचित्रकला जगत में जगह–जगह से प्राप्त होते हैं (चढ़ार, 2015)। एक अंन्य दृश्य में नाव के चित्र को उकेरकर बनाया गया है जिसमें कुछ लोग सवार है जो कि नृत्यरत अवस्था में उत्कीर्ण हैं (चित्र फलक क्रमांक–7)।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि बर्धा वरैया नाले से प्राप्त शैलचित्र पुरामानव के सांस्कृतिक इतिहास को संरक्षित किये हुये है जिसका विश्लेषणात्मक अध्ययन कर वर्तमान समय मे पुरासंस्कृति, उनके सामाजिक क्रियाकलापों को समझा जा सकता है। निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि इस भू–भाग में अति प्राचीन काल से ही पुरामानव के आवास एवं जीवन निस्पादन हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान किया है।

सुझाव

शैलचित्रों के संरक्षण हेतु जनसामान्य को इनके प्रति जाग्रत करना अति –आवश्यक है अन्यथा अज्ञानतावश हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर धीरे–धीरे नष्ट होती जा रही है, लेकिन जो कुछ भी बचा है उसे सुरक्षित रखा जा सकता है इसके लिए यदि हम बच्चों को स्कूल से ही प्रशिक्षित करे तो जन–जागरूकता भारतीय संस्कृति की इस अमूल्य धरोहर को सुरक्षित किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

खत्री, ए. पी.(1964). रॉक पेटिन्गास् ऑफ आदमगढ़ (सेन्ट्रल इंडिया) एण्ड देयर ऐज, एन्थ्रोपोस, 59, पृष्ठ–759.–769.

जैन, सुनीता. (2014). चित्रकला में रंग – प्रागैतिहासिक काल मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में. इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च–ग्रन्थालय, पृष्ठ–1–2.

गुप्त, जगदीश. (1967) प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, दिल्ली।

चढ़ार, मोहन लाल. (2015). रॉक पेन्टिगस् साइटस् इन सागर डिस्ट्रिक्ट (म.प्र.), सेन्ट्रल इंडिया जरनल ऑफ हिस्टोरिकल एण्ड ऑर्कियोलॉजीकल रिसर्च, वाल्यूम 4.

जोशी, आर.वी. (1961) स्टोन ऐज इंडस्ट्रीज ऑफ दी दमोह एरिया मध्यप्रदेश. एंशियेन्ट इंडिया बुलेटन ऑफ आर्कियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, नंबर 17,

दुबे–पाठक, मिनाक्षी. (2013). हैण्डप्रिन्टस् इन द रॉक आर्ट एण्ड ट्राइबल आर्ट ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया. आइ. एफ.एफ.आर.ओ. प्रोसिडिंग।

पाण्डेय, अंजली एवं अंजली मिश्रा. (2017). कठोतिया के शैलचित्रों की विषयवस्तु का कलात्मक विवेचन. आई. जे. आर. जी, 266–273.

पाण्डेय, एस. के. (1993). इंडियन रॉक आर्ट. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।

मठपाल, यशोधर. (1984). पिरिहिस्टोरिक रॉक पेटिन्गस् ऑफ भीमबेटका, सेन्ट्रल इण्डिया. न्यू दिल्ली : इन्द्रा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर द आर्ट।

मठपाल यशोधर 1976–77 फरदर ऐविडेन्स ऑफ जिराफ लाइक लान्ग–नेकड एनिमल इन द रॉक पेटिंग्स ऑफ इंडिया बुलेटिन ऑफ द डेक्कन कॉलेज पोस्ट–ग्रजुऐट एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट, वाल्यूम–36, नं.–1/4(1976–77), पृष्ठ –110–114.

मठपाल, यशोधर. (1976–77). फरदर एविडेन्स ऑफ जिराफ लाईक लोन्ग–नेकड ऐनिमल इन द रॉक पेटिंग्स ऑफ इंडिया , पुणे : बुलेटिन ऑफ द ढेक्कन कालेज पोस्ट–ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च

इंस्टीट्यूट, वॉलयूम 36, पेज 110–114.

राजेन्द्र देहुरी एवं सचिन कुमार तिवारी. (2014). रॉक आर्ट ऑफ बिजावर सब डिविजनः स्टडी इन लाइट ऑफ पुतलीकादन्ता एण्ड पूर्णकादन्ता रॉक आर्ट साइटस्, छतरपुर डिस्ट्रिक्ट, मध्यप्रदेश, इंडिया, बुलेटिन ऑफ ए.पी.ए.आर. नबम्वर 2014, पृष्ठ–953–963.

बेन्डरिक, आर. जी. (2011) एथनोग्राफिक एनालॉगी इन रॉक आर्ट इन्टरप्रेटेशन मेन इन इंडिया, 91(2), पृष्ठ–223–234.

विजय कुमार. (2017). रॉक पेन्टिगस् ऑफ चित्रकूट, उत्तरप्रदेश, इंडियन जनरल ऑफ ऑर्कियोलॉजी, अप्रैल 2017, पृष्ठ–1–1105.

वी. एच. सोनवाने. (2002). रॉक आर्ट इण्डिया. इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, मोनोग्राफ सीरीज 6, रीसेन्ट स्टडीज इन इंडियन ऑर्कियोलाजी, के. पदैया,(सम्पादित) मनुश्रीराममनोहरलाल पब्लिर्स, न्यू दिल्ली, 266–294।

मिश्रा, वी. एन. (1981). प्रीहिस्टोरिक रॉक आर्ट ऑफ भीमबेटका, सेन्ट्रल इंडिया , जनरल ऑफ द नेशनल सेन्टर फॉर द परफारमिंग आर्टस् वाल्यूम 10(1) पृष्ठ 1–16.

सिंह, रामेश्वर (1965). पेलियोलिथिक इन्डसट्रीज, नॉर्दन बुन्देलखण्ड, पुणे : ढेक्कन कालेज पुणे। (अप्रकाशित शोध प्रबंध) ।

सोनी, संजय बाबू (2002).दमोह जिले का पुरातत्त्व (अप्रकाशित शोध प्रबंध) डॉ. हरि सिह गौर विश्वविद्यालय, सागर मध्यप्रदेश।

सोनी, संजय बाबू (2000).दमोह जिले के शैलचित्र . रविन्द्रनाथ अग्रवाल, इंडियन रॉक आर्ट विस–ए–विस एथनोग्राफी.(पेज 25–26) नागपुर : गुप्ता पब्लिशर्स।

पाठक, अशर्फीलाल (1971).दमोह जिले ऐतिहासिक पुरातत्त्व : ईसवी–पूर्व 600 से 1200 ईसवी सन् (अप्रकाशित शोध प्रबंध) डॉ. हरि सिह गौर विश्वविद्यालय, सागर मध्यप्रदेश।